International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 03-09-2025, Accepted: 03-10-2025, Published: 18-10-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 27-28

भारतीय संस्कृति एवं युद्ध विराम

डॉ. पूनम जैन[1], वर्षा महिवाल[2]
[1] प्राचार्या, दिशा डेल्फी पब्लिक स्कूल कोटा, राजस्थान, भारत
[2] हिंदी विभाग, दिशा डेल्फी पब्लिक स्कूल कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश
भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है, जिसकी आधारशिला धर्म, करुणा, सह–अस्तित्व एवं अहिंसा पर आधारित है। इस संस्कृति में युद्ध को कभी भी पहला विकल्प नहीं माना गया, बल्कि उसे धर्म की रक्षा हेतु अंतिम उपाय माना गया है। युद्ध के उपरांत 'विराम' यानी शांतिपूर्वक समाधान की तलाश भारतीय दृष्टिकोण की विशेषता रही है। यह शोधपत्र भारतीय संस्कृति में शांति और युद्ध विराम की परंपरा को ऐतिहासिक, दार्शनिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करता है।

मूल शब्दः भारतीय संस्कृति, युद्ध विराम, टहिंसा, धर्म, करुणा, सह–अस्तित्व

प्रस्तावना
भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है, जिसकी जड़ें वेद, उपनिषद, महाकाव्य तथा दार्शनिक परंपराओं में गहराई तक फैली हुई हैं। भारतीय चिंतन ने सदैव मानवता, करुणा, और सामूहिक कल्याण को महत्व दिया है। "वसुधैव कुटुम्बकम" (सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है) का आदर्श भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा है (शर्मा, 2012)। इसी आधार पर भारतीय परंपरा में युद्ध को अंतिम विकल्प माना गया है तथा शांति और युद्ध–विराम को उच्चतम मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है।
महाभारत जैसे महाकाव्य युद्ध की अनिवार्यता और उसकी विभीषिका को दिखाते हैं, परन्तु साथ ही धर्म, न्याय और अंततः शांति की स्थापना को प्राथमिकता देते हैं (चतुर्वेदी, 2015)। भगवान बुद्ध और महावीर ने अहिंसा और करुणा के मार्ग पर बल दिया, जिसने भारतीय संस्कृति को विश्वभर में शांति और युद्ध–विराम की प्रेरणा का केन्द्र बनाया (दास, 2017)। आधुनिक काल में महात्मा गांधी ने सत्याग्रह और अहिंसा को राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का साधन बनाकर यह सिद्ध किया कि युद्ध–विराम और शांति केवल आदर्श नहीं बल्कि व्यावहारिक विकल्प भी हो सकते हैं (गांधी, 1927/2008)।
युद्ध–विराम (Ceasefire) का विचार अंतरराष्ट्रीय संबंधों और कूटनीति में विशेष महत्व रखता है। भारतीय संस्कृति में युद्ध–विराम केवल युद्ध की समाप्ति का साधन नहीं, बल्कि मानव कल्याण और न्यायपूर्ण शांति की ओर एक नैतिक कदम माना गया है (कुमार, 2020)। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जब संघर्ष और आतंकवाद की चुनौतियाँ बढ़ रही हैं, भारतीय संस्कृति की शांति–दृष्टि और युद्ध–विराम की नीति न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक है।

भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणाएँ
1. अहिंसा और शांति का सिद्धांत
भारतीय संस्कृति की नींव वैदिक, बौद्ध, जैन, और हिंदू परंपराओं पर आधारित है, जिसमें शांति, संयम, सहिष्णुता और करुणा जैसे गुणों को उच्चतम मूल्य माना गया है।

अहिंसा परमो धर्मः – यह मूल सिद्धांत महाभारत, जैन धर्म और विशेष रूप से महात्मा गांधी के विचारों में प्रमुख है।
बुद्ध और महावीर ने युद्ध नहीं, बल्कि आत्मसंयम और क्षमा को अपनाने पर बल दिया।
गीता में युद्ध को धर्म की रक्षा हेतु अंतिम उपाय बताया गया है, परंतु अर्जुन के मन में जो प्रारंभिक संकोच था, वह युद्ध की भयावहता और शांति की महत्ता को दर्शाता है। भारतीय संस्कृति में युद्ध के स्थान पर संवाद, क्षमा, और सहिष्णुता को प्राथमिकता दी जाती रही है।

2. धर्म और युद्ध
भगवद्गीता में युद्ध को धर्म की रक्षा हेतु आवश्यक बताया गया, किन्तु साथ ही अर्जुन के द्वंद्व में युद्ध की नैतिकता पर प्रश्न उठता है। रामायण में राम ने लंका विजय के उपरांत विभीषण को गद्दी पर बैठाकर शांति स्थापित की। महाभारत के युद्ध के बाद भी पांडवों ने शासन के लिए शांति एवं धर्म का मार्ग अपनाया।

युद्ध विराम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
भारतीय इतिहास में कई उदाहरण मिलते हैं, जहाँ युद्धों के बीच या बाद में शांति स्थापित करने के प्रयास किए गए:

1. सम्राट अशोक और कलिंग युद्ध
प्राचीन काल के उदाहरणः अशोक का कलिंग युद्ध (261 ई. पू.) – यह युद्ध अत्यंत रक्तरंजित था। युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया और जीवनभर अहिंसा और शांति का प्रचार किया। अशोक ने 'धम्म' (धर्म) के प्रचार हेतु युद्ध को त्याग दिया और 'धम्म विजय' की नीति अपनाई। राजा हरिषचन्द्र और युधिष्ठिर जैसे चरित्र न्याय, करुणा और संयम का उदाहरण हैं, जो युद्ध में भी मर्यादा और नीति का पालन करते थे।

2. प्राचीन भारत में क्षत्रिय धर्म
युद्ध में भी मर्यादा, शुचिता और नीति का पालन करना क्षत्रिय धर्म का अंग था।
युद्ध विराम की नीति युद्ध के मध्य संधि प्रस्ताव, युद्ध समाप्ति के उपरांत शांति संधियाँ आदि के रूप में प्रकट होती रही।

आधुनिक भारत में युद्ध विराम की भूमिका
1. भारत–पाक युद्ध और युद्ध विराम
1947–48: युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता में युद्ध विराम लागू।
1971: बांग्लादेश युद्ध के पश्चात शिमला समझौता (1972) के द्वारा स्थायी शांति की कोशिश।

1999: कारगिल युद्ध के बाद राजनयिक स्तर पर युद्ध विराम प्रयास।
2003 में सीज़फायर समझौता, जिसे कई वर्षों तक सीमित संघर्ष विराम के रूप में निभाया गया।
इन सभी में भारत ने हमेशा पहले शांति की पहल की और युद्ध को टालने की कोशिश की।

भारत का वैश्विक शांति दृष्टिकोण
संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में भारत की सक्रिय भागीदारी।
"वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना: संपूर्ण विश्व एक परिवार है।

भारतीय संस्कृति में युद्ध के बाद की पुनर्संरचना
1. शांति स्थापना के उपाय
समाज में युद्ध के दुष्परिणामों को कम करने हेतु परामर्श, शिक्षा एवं पुनर्वास की नीति।
युद्ध के उपरांत पीड़ितों की सहायता, दया एवं सेवा की भावना भारतीय मूल्यों का हिस्सा रही है।

2. संवाद की संस्कृति
सभाएँ', पंचायतें और संवाद की परंपरा – जहाँ समस्या का समाधान बिना रक्तपात के खोजा जाता है।

निष्कर्ष
भारतीय संस्कृति और युद्ध विराम (ceasefire) एक–दूसरे से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं, क्योंकि भारतीय परंपरा में शांति, अहिंसा, और धर्म की महत्ता को सदैव सर्वोपरि स्थान मिला है। भारतीय संस्कृति की आत्मा मूलतः शांति और समरसता में निहित है। युद्ध को यहां कभी उत्सव नहीं माना गया, बल्कि एक अनिवार्य पीड़ा के रूप में देखा गया है। युद्ध विराम केवल संघर्ष का अंत नहीं, बल्कि पुनः मानवता की ओर लौटने का एक संकल्प है। आज की वैश्विक राजनीति में जब युद्ध का खतरा मंडरा रहा है, तब भारतीय संस्कृति का यह दृष्टिकोण मार्गदर्शक बन सकता है।
भारतीय संस्कृति युद्ध को अंतिम विकल्प मानती है, और शांति को स्थायी समाधान। चाहे वह प्राचीन धर्म ग्रंथ हों या आधुनिक कूटनीति, भारत का दृष्टिकोण युद्ध विराम के पक्ष में, मानवता की रक्षा और सार्वभौमिक कल्याण की भावना से प्रेरित रहा है। हम ही नहीं पूरा देश भारत के युद्धविराम की राह को सही मानता है इससे दोनों ही देशों के आम जनता खून खराबे से बची और भारत ने वैश्विक जगत को यह बताया की शांति में सबका भला है युद्ध में नहीं ।

सुझाव
शिक्षा प्रणाली में शांति अध्ययन (Peace Studies) को अनिवार्य किया जाए। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत को शांति–स्थापना की सांस्कृतिक भूमिका को अधिक सक्रिय रूप से प्रस्तुत करना चाहिए। युवाओं को भारतीय दर्शन, रामायण, महाभारत, जैन–बौद्ध ग्रंथों के माध्यम से शांति की संस्कृति से जोड़ना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2012). भारतीय संस्कृति: एक परिचय. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. चतुर्वेदी, वी. (2015). महाभारत और धर्म युद्ध की अवधारणा. वाराणसी: भारती पुस्तक मन्दिर।
3. दास, एस. (2017). अहिंसा की परंपरा: बुद्ध से गांधी तक. कोलकाता: ज्ञानदीप प्रकाशन।
4. गांधी, एम. के. (2008). सत्य के प्रयोग (मूल प्रकाशन 1927). अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट।
5. कुमार, ए. (2020). भारतीय विदेश नीति और शांति दृष्टि. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
6. भगवद्गीता (अनुवाद: स्वामी चिन्मयानंद), http:/ / chinmayagita.net /
7. सम्राट अशोक और उनका धर्म द्र रोमिला थापर
8. किशन कुमार, सम्राट अशोकः परिवार, कलिंग युद्ध, बौद्ध धर्म और मृत्यु, जानें, https:/ / www.jagranjosh.com / general–knowledge / biography–of–ashoka–the–king –1708948739–2
9. गांधीजी के विचार – "My EÛperiments with Truth"
10. भारत की विदेश नीति – शशि थरूर
11. "India and the United Nations Peacekeeping" – Ministry of External Affairs, Govt- of India
12. Mahabharata (Critical Edition), Bhandarkar Oriental Research Institute
13. कर्पूर चन्द्र कुलिश, युद्ध में भारतीयों के हौसले : भारतीय संस्कृति, आत्मा व समाज व्यवस्था आज भी विद्यमान, May 22, 2025, https:/ / www-patrika-com / opinion / the–courage–of–indians–in–the–war–19615079